" होली पर शुभकामनाएं"

बढ़े न अहंकार प्रभु इतना
रिपु सम लगे तनय भी ।
तिमिर न छाए मन पर इतना
लगे सुधर्म अनय भी ।
क्षिप्त न हों पावक में पावन
उर निर्मल मन धारी ।
बनें न बालक छल हिंसा के
पीड़ा के अधिकारी ।।

मात्र आसुरी भावों प्रति हो
चण्ड सदैव हुताशन ।
पुनः प्रवृत्त जीव मन में हो
ऋषि प्रेरित अनुशासन ।
जगे आत्मबल धर्म हेतु सब
कष्ट सहन करने का ।
जगे विवेक बाल में भी अब
मात्र श्रेय वरने का ।।

नर पशु के निरोध हित धरना
पड़ता वपु नर पशु का ।
नख कृत उर दारण विधेय है
कृंतन आसुर असु का ।
कौन अनीति विरोध विना ही
सुखी हुआ इस भव में ।
मौन पाप सहने वाले में
अंतर क्या है शव में ।।

आओ पुनः जला दें होली
अरिकृत षड्यंत्रों की ।
फिर से पावन कर दें वसुधा
ध्वनि हो फिर मंत्रों की ।
यदि हो दृढ़ विश्वास प्रकट
होंगे नृसिंह तव उर में ।
गूंजेगा जय गान भरत भू
के हर घर प्रति पुर में ।।

28-3-2021 - शिव कुमार मिश्र
भोपाल